# लोकगीत

**पाठ का सार / प्रतिपाद्य -**

प्रस्तुत पाठ 'लोकगीत' के लेखक 'भगवतशरण उपाध्याय' जी हैं। लोकगीत लोगों द्वारा बनाए गए गीत हैं। जिसका सीधा संबंध उनकी भावनाओं से है। लोकगीतों को गाने के लिए किसी संगीत साधना की ज़रूरत नहीं होती है। अलग-अगल अवसरों के लिए अगल-अलग प्रकार के लोकगीत होतें हैं। शादी के लिए, जन्म के समय, नदी में नहाते समय के, नहने जाते समय के, यात्रा पर के आदि हर प्रकार के अवसर पर गाए जाने वाले लोकगीतों का प्रचलन है। हर प्रांत के लोकगीतों में भिन्नता पाई जाती है। जैसे - आदिवासियों के संगीत, यह संगीत अक्सर दल में नाचते हुए गाया जाता है। इसी प्रकार पंजाब के लोकगीत अधिकांश हीर-रांझा, सोनी-महिवाल की कथाओं पर आधारित होते हैं। वे लोकगीत जो ग्रामीण तथा देहाती इलाकों में गाए जाते हैं; उनकी रोज़मर्रा के जीवन से प्रभावित होते हैं। गरवा गुजरात का बहु प्रसिद्ध गीत है जिसको गाने के साथ-साथ लोगों द्वारा एक घेरा बनाकर नाचा भी जाता है। बिदेसिया भोजपूरी का प्रसिद्ध और बेहद पुराना लोकगीत है। लगभग 30-40 बरसों से यह गाया जाता है। यह बीहार का सबसे प्रिय लोकगीत है। बुंदेलखंड में आल्हा बहुप्रसिद्ध लोकगीत है। इसके आविश्कारक राजकवि जगनिक को माना जाता है। इसमें राजा महराजाओं के वीरता के किस्से गाए जाते थे। समय के साथ-साथ इसमें परिवर्तन लाए गए हैं। हमारे देश में ज़्यादातर लोकगीत स्त्रियों द्वारा ही गाया जाता है। लेकिन लोकगीतों को गाने के दौड़ में पुरुष भी बढ़-चढ़ कर भाग ले रहे हैं। फिर भी कुछ ऐसे लोकगीत हैं जो केवल स्त्रियाँ ही गाती हैं। महाकवि कालीदास ने भी अपने ग्रंथों में इस प्रकार के गीतों का उल्लेख किया है। सोहर, बानी, सेहरा आदि इसी प्रकार के गीतों के उदाहरण हैं। बारहमासा भी एक प्रकार का लोकगीत है जिसे स्त्री और पुरुष दोनों मिलकर गाते हैं। स्त्रियों द्वारा गाए जाने वाले गीत प्रायः अकेले नहीं गाए जाते हैं। ये दल में गाए जाते हैं। लोकगीत आनंद के स्रोत होते हैं। इनको गाने से मन में उत्साह भर जाता है।

**कुछ रोचक बातें -**

(1) लोकगीतों को गाने के लिए किसी नीयम या साधना की आवश्यक्ता नहीं होती है।
(2) **ढोला-मारू** राजस्थानी लोकगीत है।
(3) गढ़वाल, किन्नौर, काँगड़ा के लोकगीतों का नाम **पहाड़ी** है।
(4) **बिदेसिया** बीहार का प्रचलित लोकगीत है।
(5) **आल्हा** बुंदेलखंडी लोकगीत है। इसके प्रवर्तक राजकवि जगनिक को माना जाता है।
(6) लोकगीतों का उल्लेख महाकवि कालीदास के ग्रंथों में भी किया गया है।

**पाठ का उद्देश्य -**

पाठ के माध्यम से लोकगीतों के महत्व को बताया गया है। लोकगीत हमारी सांसकृतिक धरोहर है। यह सामान्य जन-जीवन से प्रभावित है। लेखक ने लोकगीत संबंधित विशेष जानकारियों को लोगों तक पहुँचाने का प्रयास किया है।

**पाठ का संदेश -**

लोकगीत का सीधा संबंध हमारी संस्कृति से है। अतः हमें इसके विकास के लिए निरंतर प्रयत्नशील रहना चाहिए। पिछले कुछ वर्षों में लोकगीतों ने समाज में अपना एक विशेष स्थान बनाया है। लेखक ने हमें लोकगीतों को समाज में प्रतिष्ठित करने का संदेश दिया है।